सत्यमेव-जयते

सफलता की कहानी

परियोजना निदेशक, आत्मा

पूर्वी सिंहभूम, जमशेदपुर

संयुक्त कृषि भवन, खासमहल, जमशेदपुर

email: atmajsr321@gmail.com

श्री मिथिलेश कुमार कालिन्दी
परियोजना निदेशक
आत्मा, पूर्वी सिंहभूम

संदेश

आत्मा, पूर्वी सिंहभूम द्वारा गत 13 वर्षों से सफलतापूर्वक चलाई जा रही कृषि गतिविधियों से लाभान्वित एवं विभागीय योजनाओं से जुड़े हुए कृषकों की सफलता की कहानी समर्पित करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। इसके माध्यम से आत्मा पूर्वी सिंहभूम द्वारा चलाई जा रही किसानोपयोगी कार्यकलापों एवं उससे लाभान्वित हो रहे किसानों के सफलता से आप सभी को अवगत करने का प्रयास किया गया है। जिला स्तर पर उपायुक्त–सह–अध्यक्ष (आत्मा), पूर्वी सिंहभूम एवं उप विकास आयुक्त–सह उपाध्यक्ष (आत्मा), पूर्वी सिंहभूम एवं राज्य स्तर पर नोडल पदाधिकारी (आत्मा)–सह–कृषि निदेशक, झारखंड तथा निदेशक समेति, झारखंड के नियमित मार्गदर्शन का आत्मा के गतिविधियों को गति देने में उल्लेखनीय भूमिका रही है। कृषि एवं सम्बद्ध विभागों के समेकित समन्वय सहयोग के द्वारा (आत्मा), पूर्वी सिंहभूम अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतू सतत् प्रयत्नशील है और आत्मा परिवार उनके सहयोग का सदा आभारी रहेगा।

मेरा पूर्ण विश्वास है कि आत्मा से जुड़े कृषि एवं संबंद्ध विभाग, आत्मा के सभी प्रसार कर्मी गैर सरकारी संस्था एवं कृषकों की सहभागिता से जिले में कृषकों के हित में अनावरत हम कार्य करते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

(मिथिलेश कुमार कालिन्दी)

अनुक्रमणिका

सफलता की कहानी

वर्ष : 2022-23

क्रम सं0	विवरणी	पृष्ठ सं0
1	विभागीय सहयोग से सबल बनी महिला किसान – अष्टमी महतो	2
2	किसान क्रेडिट कार्ड से मिला ऋण एवं तरबूज की खेती कर बने सफल किसान – बिधान मंडल	3
3	तकनीकी खेती ही दुगुना आय का स्त्रोत – विपल्लव राउत	4
4	समेकित कृषि प्रणाली ने दिलाई पहचान एक युवा किसान की – राजेन्द्रनाथ महतो	6
5	कृषि ऋण के सदुपयोग से सफल किसान की कहानी – कांचन दास	8
6	पारंपरिक खेती से फुलों की खेती की ओर बढ़ते कदम – राजेश गोराई	9
7	बुंद–बुंद पानी से जिंदगी की सिंचाई में सफल – रोमेन पाल	11
8	किसान क्रेडिट कार्ड खेती का मजबूत सहारा – मुचीराम सोरेन	12
9	निंबु की खेती में सफल – शिवचरण पाड़ेया	14
10	फुलों की खेती से आय में वृद्धि बेकारी का विकल्प – महेश्वरी मुण्डा	16

विभागीय सहयोग से सबल बनी महिला किसान

किसान का नाम	–	अष्टमी महतो	पिता का नाम	–	पतन कुमार महतो
ग्राम	–	बड़ा सुसनी	पंचायत	–	रसिकनगर
प्रखण्ड	–	बोड़ाम	जिला	–	पूर्वी सिंहभूम
मोबाइल नं0	–				

अष्टमी महतो बहुत ही सुलझी हुई घरेलु महिला होने के साथ–साथ एक सफल महिला कृषक भी है। उनके खेत में जाने से ही यह अनुभव होने लगता है कि अष्टमी महतो आधुनिक तरीके से परिचित है। खेती–बाड़ी के इस तकनीक के अपनाने एवं उन्हें प्रोत्साहित करने में आत्मा पूर्वी सिंहभूम का अहम योगदान है। पूर्वी सिंहभूम जिला के सब्जी उत्पादक प्रखण्ड के रूप में चिन्हित बोड़ाम के ग्राम बड़ासुसनी की रहने वाली अष्टमी महतो विगत कई वर्षों से श्रीविधि से धान की खेती कर रही है। इसके साथ–साथ सब्जी जैसे लौकी, टमाटर, मटर, मूली, पालक, लालभाजी आदि की खेती बहृत पैमाने पर कर रही है। वर्षों पहले उनके दादाजी के समय में एक तालाब की खुदाई की गयी थी उसी को जीर्णोद्धार कर सिंचाई हेतु पानी की व्यवस्था की है।

वर्ष 2016 में आत्मा के कर्मी ने 35,000/– रू0 का KCC लोन उनके पति के नाम से बैंक से स्वीकृत कराने में उन्हें सहयोग किया। पिछले 8 वर्षों से अष्टमी महतो किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से लोन लेकर सब्जी उत्पादन के साथ–साथ मछली पालन कर मुनाफा कमा रही है और ससमय ऋण का चुकता करती जा रही है।

आत्मा के द्वारा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजना के तहत 50 प्रतिशत अनुदान पर पंपसेट मुहैया कराया गया है। कृषि विभाग से लगातार जुड़ाव होने के कारण अष्टमी महतो को जरेडा संस्थान के माध्यम से अनुदान पर कुसुम योजना के तहत सोलर पम्प दिलवाया गया है। सिंचाई की सुविधा सुलभ होने से सालों भर सब्जियों की खेती कर अष्टमी महतो सालाना एक लाख से अधिक कमा रही है।

किसान क्रेडिट कार्ड से मिला ऋण एवं तरबूज की खेती कर बने सफल किसान

किसान का नाम	–	विधान मंडल	पिता का नाम	–	सुनील रतन मंडल
ग्राम	–	महुलडीहा	पंचायत	–	टाँगराइन
प्रखण्ड	–	पोटका	जिला	–	पूर्वी सिंहभूम
मोबाइल नं0	–	7541885154			

विधान मंडल 2014 से अपने पिता सुनील रतन मंडल के साथ खेती के कामों में साथ देने लगे। उनके परिवार में और कोई कमाने वाला है भी नहीं। पिताजी किसी प्रकार वर्षों से अपने परिवार का भरण–पोषण करते आ रहे हैं। अपने 5 एकड़ जमीन में से 3 एकड़ जमीन में धान की खेती करते। विधान मंडल इससे कुछ अलग हटकर खेती बाड़ी करना चाहते थे। व्यवसायिक तौर पर कृषि कार्य करते हुए कमाना चाहते थे। परन्तु कृषि तकनीक की कम जानकारी, जोखिम एवं पूँजी का अभाव के वजह से नहीं कर पाये।

विधान मंडल पाँच वर्ष पूर्व 2017 में व्यवसायिक तौर पर खेती करने के लिए बैंक से ऋण लेकर एवं कुछ स्वयं का पूँजी लगाकर सब्जी की खेती करना शुरू किया। आत्मा के प्रसार कर्मी ने इनको मदद किया जिससे युनियन बैंक खैरपाल शाखा पोटका से 85,000/– हजार का कर्ज मिला। कर्ज लेकर पूरे 5 एकड़ में तरबूज, फूट, करेला एवं बरबटी का खेती शुरू किया। गर्मी के मौसम में तरबूजा की माँग बढ़ जाती है इसको देखते हुए विधान मंडल ने तरबूज का बृहत स्तर पर व्यापार करना शुरू किया। इस कार्य में आत्मा के प्रसार कर्मी ने उन्हें तकनीकी रूप से प्रोत्साहित किया।

विधान मंडल के पास खरीददारी के लिए व्यापारी खुद आते है। विधान स्वयं भी स्थानीय बाजार में जा कर बेचते है। विधान मंडल को 50 क्वींटल फूट का उत्पादन प्राप्त हुआ जिससे बेचकर 75,000/– से अधिक मुनाफा किया है वहीं लगभग 6 क्वींटल तरबूज का उपज हुआ था जिससे 12,000/– से अधिक मुनाफा हुआ इस तरह विधान मंडल को एक ही मौसम में एक बार का लिया हुआ कर्ज के बराबर मुनाफा हुआ जो इनके लिए काफी खुशी की बात है। विधान बताते है कृषि विभाग के ओर से उन्हें कोनोवीडर मिला जिससे वह पिछले साल धान की लाइन विधि से खेती किया है। आत्मा के प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक कौशल झा ने उन्हें बैंक से के0सी0सी0 लोन दिलाने में मदद किया। विधान मंडल के अनुसार अगर किसान भाई लोन लेकर पैसों का सही इस्तेमाल करेंगे तो जरूर साग–सब्जी की खेती करके लाभ कमायेंगे और लोन भी समय पर लौटा सकेंगे।

तकनीकी खेती ही दुगुना आय का स्त्रोत

किसान का नाम	–	विपल्लव राउत	पिता का नाम	–	माधव राउत
ग्राम	–	सरडीहा	पंचायत	–	सरडीहा
प्रखण्ड	–	चाकुलिया	जिला	–	पूर्वी सिंहभूम
मोबाईल सं0	–	8084508747			

कृषि एवं मुर्गी पालन कर आज विपल्लव राउत अपने पैरों पर खड़े होकर अपने परिवार का सफलतापूर्वक देख–रेख कर पा रहे हैं। इंटर की पढ़ाई किये हुए विपल्लव राउत कभी सेना में नौकरी करने की इच्छा रखते थे, परन्तु उनका यह इच्छा पुरा नहीं हो सका। विपल्लव ने इसके लिए बहुत प्रयास भी किए थे लेकिन सफल नहीं हो सके। विपल्लव यानी क्रांति, आज एक सफल कृषि के रूप में विपल्लव ने एक क्रांति लाते हुए अपने परिवार और अन्य किसान के लिए प्रेरणास्रोत बन कर उभरे है।

विगत 6 साल पूर्व से धान की खेती के अलावे इन्होंने करैला का आधुनिक तकनीक से खेती प्रराम्भ किया। इसके लिए कृषि विभाग आत्मा संस्थान के ओर से उन्हें प्रोत्साहित किया गया। तकनीक

के प्रति जिज्ञासु विपल्लव ने करैला की मचान विधि से खेती लगभग 1 एकड़ में किया। एक एकड़ में करेले की खेती करने के लिए विपल्लव ने 20 हजार रू0 खर्च किया जिससे बीज, खाद एवं मचान के लिए रस्सी, बाँस आदि का व्यवस्था किया। 20 क्वींटल करेला का उपज हुआ जिससे लगभग चालीस हजार से अधिक मुनाफा हुआ है।

आत्मा के ओर से विपल्लव राउत को सरसों का बीज दिया गया। सरसों प्रत्यक्षण कार्य आत्मा की ओर से राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजनान्तर्गत चलाया जा रहा है। आधे एकड़ में लगे सरसों का फसल की उपज से विपल्लव का आत्मा से जुड़ाव होते गया। जिससे कृषि एवं अन्य विभाग के योजनाओं के बारे में भी उनको जानकारी प्राप्त होने लगा।

विपल्लव राउत अब बृहत पैमाने पर धान की खेती के अलावे अपने खेत में करैला की खेती कर रहे है इसके लिए उन्हें आत्मा के प्रसार कर्मी हमेशा सहयोग एवं प्ररित करते है। समेकित कृषि प्रणाली को अपनाते हुए विपल्लव राउत खेती के साथ–साथ बॉयलर मुर्गी का पालन भी कर रहे है। उनके फार्म में अभी 1000 से अधिक मुर्गियाँ है। सीजन में लगभग एक से सवा किलो का होने पर थोक विक्रेता को बेच देते है। स्वयं भी खुदरा में बेचते है। इस तरह से मुर्गी पालन कर विपल्लव राउत को सलाना सवा लाख रूपये का आमदनी हो जाता है। इस तरह से सलाना करैला की खेती एवं मुर्गी पालन से डेढ़ लाख से अधिक का शुद्ध मुनाफा विपल्लव राउत को हो रहा है।

समेकित कृषि प्रणाली ने दिलाई पहचान एक युवा किसान की

किसान का नाम	–	राजेन्द्रनाथ महतो	पिता का नाम	–	छुटूलाल महतो
ग्राम	–	बड़ा सुसनी	पंचायत	–	रसिकनगर
प्रखण्ड	–	बोड़ाम	जिला	–	पूर्वी सिंहभूम
मोबाईन सं0	–	9608427770			

राजेन्द्रनाथ महतो 35 वर्ष के एक युवा किसान है। मध्यम वर्ग के परिवार से आने वाले राजेन्द्रनाथ ने इंटर तक पढ़ाई करने के बाद से खेती कार्य करने लगे। अन्यत्र कहीं मजदूरी करने के अपेक्षा अपने खेतों में ही मेहनत कर स्वालंबन की राह अपनाया।

राजेन्द्रनाथ महतो के पास कुल 9 एकड़ पुश्तैनी जमीन है। इनके पिता छुटूलाल महतो पम्परागत रूप से अपने पिता के द्वारा किए जा रहे धान की खेती को अपनाते हुए अपने परिवार का गुजर बसर करते थे।

कृषि विभाग अंतर्गत आत्मा संस्थान में कार्यरत किसान मित्र त्रिलोचन महतो के सहयोग एवं प्रखंड स्तर के आत्मा कर्मी के सहयोग एवं तकनीकी मागदर्शन से परम्परागत विधि को छोड़ श्रीविधि से धान की खेती की शुरूआत राजेन्द्रनाथ महतो ने 2013 में 1.00 एकड़ में किया जिससे अच्छी पैदावार प्राप्त कर राजेन्द्रनाथ ने अब 3 एकड़ जमीन में धान की खेती अब श्रीविधि से करते है जिससे उत्पादन अच्छा प्राप्त हो रहा है।

विगत 06 वर्षों से आत्मा संस्थान से जुड़े हुए है। आत्मा से जुड़ने के कारण विभिन्न सरकारी विभागों के योजनाओं के बारे में इन्हें आसानी से जानकारी प्राप्त हो जाता है। आत्मा कर्मी ने राजेन्द्रनाथ महतो को धान के अलावे रबी एवं गरमा में साग–सब्जी का खेती करने को प्रोत्साहित किया। पहले छोटे स्तर पर साग–सब्जी की खेती कर अपना गुजर–बसर करते थे। 2 एकड जमीन में राजेन्द्रनाथ महतो आलु, टमाटर, गोभी, नेनुआ, लौकी, मटर आदि का खेती कर रहे हैं।

भूमि संरक्षण विभाग से तालाब का योजना स्वीकृत होने के कारण अब राजेन्द्रनाथ महतो को कृषि कार्य में सिंचाई सुविधा सुलभ हो गया है। निजी तालाब होने से मछली पालन का कार्य भी इसने शुरू किया। शुरूआत में अपने पुँजी लगाकर मछली जीरा क्रय कर बंगाल से लेकर आते थे। अभी मत्स्य विभाग से उनको सहयोग मिल रहा है जिससे व्यवसायिक स्तर पर मछली पालन कर रहें है। आत्मा संस्थान के सहयोग से मछली पालन पर प्रशिक्षण प्राप्त कर काफी लाभ कमा रहें हैं।

धान की खेती के साथ–साथ साग–सब्जी की खेती, मछली पालन फिर बॉयलर मुर्गी का करोबार भी शुरू किये हैं। 3000 मुर्गियाँ इनके पॉल्ट्री फार्म में है अनुकुल मौसम में 10 से 15 हजार रूपये सिर्फ मुर्गी पालन से इन्हें लाभ हो रहा है।

इस तरह से देखा जाए तो युवा किसान होने के नाते राजेन्द्रनाथ महतो तकनीक को बहुत जल्द समझ पाये एवं धान की परम्परागत खेती के अलावे समेकित कृषि प्रणाली को अपना कर स्वालंबन की ओर बढ़े जिससे उनका कृषि कार्य से आय लागत की तुलना में दुगुना हुआ। सालाना लगभग दो से ढ़ाई लाख रूपये कमाकर कर आज राजेन्द्रनाथ महतो अपने क्षेत्र में एक रोल मॉडल के रूप में उभर का सामने आ रहें है जिससे प्रेरित होकर अन्य किसान भी इनके प्रोत्साहित हो रहें हैं।

कृषि ऋण के सदुपयोग से सफल किसान की कहानी

किसान का नाम	–	कांचन दास	पिता	–	स्व0 अनाथ बंधु दास
ग्राम	–	लावा	पंचायत	–	लावा
प्रखण्ड	–	पटमदा	जिला	–	पूर्वी सिंहभूम
मोबाइल नं0	–	9939384724			

कांचन दास का खेती से जुड़ाव बचपन से ही रहा है। कृषक परिवार होने के नाते पढ़ाई–लिखाई के साथ–साथ वो खेती–बाड़ी के कार्य में लगे रहें हैं। परम्परागत तरीके से हटकर उन्नत तकनीकी से खेती किसानी कर जीवनयापन के बारे में सोचकर पहले छोटे स्तर पर ही कृषि कार्य से अपने परिवार चलाते रहें। उनके पास पूँजी का अभाव होने के कारण कृषि कार्य में ज्यादा जोखिम नहीं ले पा रहें थे।

कृषि विभाग के संपर्क में आने के बाद कांचन दास वर्ष 2013 से अपने गाँव के कृषक मित्र के रूप में काम करने लगे। इस दौरान उन्होंने कृषि विभाग, आत्मा से प्रशिक्षण, परिभ्रमण आदि में भाग लिये जिसमें उन्नत तकनीकी से खेती करने का जानकारी मिला। इससे प्रोत्साहित होकर कांचन को बृहत स्तर पर व्यवसायिक खेती करने का मन हुआ।

कृषि विभाग के सहयोग से कांचन दास को किसान क्रेडिट कार्ड के माध्यम से स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, पटमदा शाखा से 2017–18 में 50,000/– रूपये लोन मिला। इसके बाद लगातार बैंक से संपर्क बनाये रखे। समय पर ऋण का चुकता करने लगे और फिर लोन प्राप्त कर खेती बाड़ी में निवेश करते रहें। इसको देखते हुए बैंक द्वारा उन्हें लगातार के0सी0सी0 लोन का लाभ दिया जा रहा है।

पूरे 2 एकड़ जमीन में अब कांचन दास साग–सब्जी की खेती करने कर रहें हैं। परिवारिक परिस्थिति पहले की अपेक्षा सुदृढ़ होने से अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाने में सफल हो रहें है। पिछले 3 सालों से लगातार आमदनी हो रहा है। एक लाख से अधिक का मुनाफा हर साल कांचन को होता है।

अभी वर्त्तमान में टमाटर, बैगन, मटर, सरसों आदि लगाये हैं। कुसुम योजना के तहत अनुदान पर सोलर पंप प्राप्त होने से सिंचाई में अभी दिक्कत भी नहीं है। कांचन बताते है अगर आगे भी उन्हें के0सी0सी0 लोन का लाभ मिलते रहे और ऋण का दायरा बढ़ेने पर कृषि के साथ–साथ पशुपालन, मत्स्यपालन भी करेंगे। कृषि ऋण का सही उपयोग कर कांचन अपने पारिवारिक स्थिति को काफी बेहतर किये हैं।

पारंपरिक खेती से फुलों की खेती की ओर बढ़ते कदम

किसान का नाम	–	राजेश गोराई	पिता	–	चन्द्रमोहन गोराई
ग्राम	–	लावा	पंचायत	–	लावा
प्रखण्ड	–	पटमदा	जिला	–	पूर्वी सिंहभूम
मोबाइल नं0	–	8084745209			

पटमदा प्रखण्ड पूर्वी सिंहभूम जिला में सब्जी उत्पादन के क्षेत्र में पहचाना जाता है यहाँ के अधिकतर किसान टमाटर, फुलगोभी एवं बंधागोभी एवं अन्य सब्जियों की बड़े पैमाने पर खेती करते है। रबी मौसम में अगेति टमाटर का उत्पादन होने से जिला से बाहर राँची, कोलकाता, भुवनेश्वर आदि शहरों में निर्यात किया जाता है परंतू रबी मौसम में अधिकतर किसानों के द्वारा टमाटर एवं सब्जी की खेती करने से सब्जियों के दाम में कमी हो जाती है एवं किसानों को आमदनी कम होता है।

उन्हीं किसानों में एक राजेश गोराई भी अन्य किसानों की तरह सब्जी की खेती कर अपना गुजर–बसर करते थे। प्रतिदिन पटमदा बोड़ाम के हाटों में सब्जी बेचकर अपना जीविका चलाते थे। पूर्व में पम्परागत रूप से धान की खेती एवं सब्जी की खेती करते–करते कुछ अलग हटकर करने की मंशा से राजेश का फूलों की खेती की ओर झुकाव हुआ। पटमदा से जमशेदपुर नजदीक होने के

कारण इनका रूझान फुलों की खेती की ओर बढ़ा। अब ये पूरी तरह फुलों की खेती में लग गये। कृषि विभाग के संपर्क में आने के बाद अनुदान पर उन्होंने ड्रीप इरीगेशन सिंचाई सिस्टम प्राप्त हुआ। कृषि विभाग से उनका जुड़ना खेती–बाड़ी के उनके कार्यशैली को पुरी तरह से बदल दिया। विभाग के पदाधिकारी एवं आत्मा संस्थान के प्रसार कर्मियों द्वारा इनको तकनीकी जानकारी से अवगत करायें। फूलों की खेती के बारे में जिला उद्यान विभाग से भी सहयोग मिला। चूँकि जमशेदपुर में फुल कोलकाता शहर से आता था इस स्थिति में जमशेदपुर के बाजार में अपना पैर जमाने में मुश्किल का सामना करना पड़ा। मौसम के बदलाव होने पर फुल का उत्पादन पर भी असर पड़ता है इस परिस्थिति में राजेश कृषि वैज्ञानिक से सलाह लेकर एवं बाजार को देखते हुए निर्णय लिया कि केवल गेंदा फुल ही नहीं अन्य फुल की खेती भी किया जाए। सिंचाई सुविधा सुलभ हो जाने से राजेश अब पुरी तरह फूलों की खेती में लग गये।

राजेश के पास अपना जमीन कम था, वो लीज में खेत लेकर बृहत रूप में राजेश ने गेंदा के साथ–साथ रजनींगधा, गुलाब, पेरीनियल क्रिजान्थिमम आदि फुलों की खेती लगभग 1 एकड़ जमीन में कर रहें हैं। इस तरह फूल की खेती से वह हर महीना 20 से 25 हजार रूपये मुनाफा कमाते है। पिछले तीन–चार सालों से फूल की खेती कर सलाना लगभग एक से डेढ़ लाख की आमदनी हो जाती है जिससे इन्हें पारिवारिक जरूरतों को पूरा करने में आसानी हो जाता है।

राजेश गोराई के तीन बच्चे है। दो बेटी, एक बेटा। तीनों बच्चे पढ़ाई कर रहें है। बड़ी बेटी स्नातक में, छोटी नवीं में है। बेटा इंटर में पढ़ाई कर रहा है। राजेश का पुराना घर के अलावे पक्का मकान भी है। घर में दो–दो मोटरसाइकिल है। सब्जी की खेती करते करते फूलों की खेती का राजेश गोराई का प्रयास रंग लाया। आज अपने परिवार के साथ सुखी संपन्न है।

बुंद–बुंद पानी से जिंदगी की सिंचाई में सफल

किसान का नाम	–	रोमेन पाल	पिता	–	रघुनाथ पाल
ग्राम	–	उपरबांधा	पंचायत	–	सुरदा
प्रखण्ड	–	मुसाबनी	जिला	–	पूर्वी सिंहभूम
मोबाईल सं0	–	9570525947			

रोमेन पाल का खेती से जुड़ाव बचपन से ही रहा है। मुसाबनी प्रखण्ड के उपरबांधा गांव के प्रगतिशील किसान रोमेन पाल शिक्षित किसान है। 4 एकड़ के अपने पूर्वज के जमीन में खेती का कार्य करते आ रहे है। सिंचाई का साधन नहीं होने के कारण सालों भर खेती करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता था। किन्हीं के माध्यम से रोमेन पाल का कृषि विभाग के कर्मी से मुलाकात हुआ। अपने समस्याओं के बारे में बताया। विभाग के कर्मी ने उनको सुक्ष्म सिंचाई योजना के लाभ के बारे में जानकारी दिया। सुक्ष्म सिंचाई योजना हेतु ऑनलाइन आवेदन समर्पित किया। आत्मा के कर्मी ने उन्हें सहयोग किया जिससे उनके खेत में सिंचाई संयंत्र का स्थापना करवाया गया।

सिंचाई की सुविधा होने से अब रोमेन पाल ने अपने खेत के आस–पास दो एकड़ जमीन लीज पर लेकर गोभी, बैगन, भिंडी, सेम आदि सब्जियों का खेती किया। विभागीय कर्मी के सहयोग एवं मार्गदर्शन से स्वयं रोमेन पाल ने एक पॉली हाउस का निर्माण किया जिसमें सब्जी की खेती के साथ–साथ नर्सरी भी तैयार कियें। विगत वर्ष उनको सोलर आधारित सिंचाई सुविधा भी प्राप्त हुआ जिससे डीजल से सिंचाई का वैकल्पिक साधन मिला। अब रोमेन पाल सालों भर सब्जियों की खेती करते हैं। घरेलु स्तर पर बकरी, गाय एवं मुर्गी पालन भी साथ में कर रहे हैं।

स्थानीय घाटशिला के बाजारों में सब्जियों का व्यापार कर रोमेन पाल सालाना 1 से 1.50 लाख रूपये शुद्ध मुनाफा कमा रहें हैं। खेती की आमदनी से घर–गुहस्थी की स्थिति सुखी–सपंन्न है।

रोमेन पाल का का कहना है कि कृषि कार्य में पौधों को जितना पानी की आवश्यकता है उतना ही पानी पौधों को देना चाहिए जिससे पानी का बचत हो क्योंकि अधिक खाना बीमारी का जड़ होता है यानि अधिक पानी बीमारी का जड़। इसका सफल तकनीक सुक्ष्म सिंचाई है।

किसान क्रेडिट कार्ड खेती का मजबूत सहारा

किसान का नाम	–	मुचीराम सोरेन	पिता	–	स्व दाखिन सोरेन
ग्राम	–	कानीकोला	पंचायत	–	आसनबनी
प्रखण्ड	–	पोटका	जिला	–	पूर्वी सिंहभूम
मोबाईल सं0	–	9204633877			

पोटका प्रखण्ड के कानीकोला ग्राम निवासी मुचीराम सोरेन वर्तमान में खेती करके लाखों की आमदनी कर रहे हैं। मुचीराम सोरेन के दो बेटे है पत्नी खेती–बाड़ी कार्य में साथ देती है। बड़ा बेटा किसी प्राइवेट कम्पनी में काम करता है। घर का खर्चा चलाने में एवं अपने पिताजी को खेती का कार्य में आर्थिक मदद करते है। दोनों भाई अपने पिताजी को खेती का कार्य में मदद करते हैं। वर्ष 2020 में जब पूरे विश्व में कोरोना का कहर छाया तब इनके परिवार पर भी आफत का साया मँडराया। सरकार के द्वारा लॉकडाउन लगा दिया गया जिसके कारण कंपनी में काम बंद हो गया। मुचीराम का बेटा भी बेरोजगार होकर घर में बैठ गया। काम नहीं मिलने के कारण लॉकडाउन में परिवार का स्थिति खराब होने लगी। ऐसे परिस्थिति में मुचीराम सोरेन खेती–बाड़ी में कोई पूँजी निवेश करने का हिम्मत नहीं कर पा रहे थे।

मुचीराम सोरेन ने किसान क्रेडिट कार्ड से ऋण लेने का मन बनाया लेकिन अपने परिचित में कोई विश्वासी व्यक्ति नहीं होने के कारण बैंक से संपर्क नहीं कर पा रहे थे। उस वक्त मुचीराम आत्मा कृषि विभाग के संपर्क में आये। आत्मा के प्रसार कर्मी ने उन्हें किसान क्रेडिट कार्ड के बारे में जानकारी दिया। बैंक से समन्वय स्थापित करा कर किसान क्रेडिट कार्ड ऋण स्वीकृत कराने में सहयोग किया। आत्मा के प्रसार कर्मी के सहयोग से मुचीराम सोरेन को बैंक ऑफ इंडिया गोविन्दपुर शाखा से 70,000/– रूपये का किसान क्रेडिट कार्ड ऋण स्वीकृत हुआ। चूँकि मुचीराम पहले से ही खेती–बाड़ी में लगे हुए है जिसके कारण ऋण स्वीकृति में ज्यादा दिक्कत भी नहीं हुआ।

ऋण लेकर मुचीराम आत्मा के प्रसार कर्मी के तकनीकी सहयोग से बैगन, भिंडी, करैला आदि का खेती 4 एकड़ खेत में शुरू किया। लॉकडाउन में पूरे परिवार के साथ कृषि का कार्य करने से उनको सब्जी बेचकर अच्छा मुनाफा हुआ। धान के अलावे सब्जी, तेलहन, दलहन की खेती कर रहें हैं। आत्मा अन्तर्गत राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन योजना के तहत मुचीराम को स्प्रेयर मशीन 50 प्रतिशत अनुदान पर मिला है।

विगत वर्ष 2022 में झारखण्ड सरकार के ऋण माफी योजना के तहत् उनका 50 हजार रूपये का ऋण भी माफ हो गया। कुछ दिन पहले मुचीराम सोरेन ने मोटर साईकिल TVS XL-100 खरीदा है जिससे आस–पास के बाजारों में उन्हें अब सब्जी पहूँचाने में सहुलियत हो गया है। इस तरह से देखा जाए तो तकनीकी तौर पर सहयोग मिलने एवं सरकार के लाभकारी योजना से लाभ लेकर मुचीराम सोरेन सालाना खेती–बाड़ी कर डेढ़ लाख से अधिक कमा रहें हैं।

निंबु की खेती में सफल शिवचरण पाड़ेया

किसान का नाम	–	शिवचरण पाड़ेया	पिता	–	
ग्राम	–	बारूनिया	पंचायत	–	धोलाबेड़ा
प्रखण्ड	–	डुमरिया	जिला	–	पूर्वी सिंहभूम
मोबाइल नं0	–				

बारूनिया गांव के शिवचरण पाड़ेया निंबु की खेती कर अपना आमदनी का जरिया निश्चित कर रहे हैं। डुमरिया प्रखण्ड मुख्यालय से महज 15 किलोमीटर दूरी पर बसा बारूनिया गांव घने जंगलों से घिरा हुआ है। भरण पोषण के लिए पूरा गाँव कृषि पर निर्भर है, शिवचरण का परिवार भी किसान परिवार से आता है। इनका परिवार भी आज से कुछ साल पहले तक खेती–किसानी कर अपना जीवन–यापन करते थे। शिवचरण के पिता अपने समय में लगभग 200 बारहमासी काब्जी निंबु के पौधे लगाए थे जो अभी 100 ये ज्यादा की संख्या में है जो फल दे रहा है। शिवचरण अधिक पढ़े–लिखे नहीं है। निंबु की खेती को ही व्यवसाय के रूप में कर रहा है। निंबु के साथ–साथ साग–सब्जी की बागवानी एवं बकरी पालन का व्यापार शुरू किया। काफी कठिन परिस्थियों का सामना करते हुए शिवचरण पाड़ेया आज अपने पैरों पर खड़े हैं। शुरूआत के समय में प्रति निंबु की कीमत 20–30 पैसे हुआ करती थी और दो निंबु पर 50 पैसे मिलते थे। साईकिल से घाटशिला, मुसाबनी, डुमरिया और उड़िसा राज्य के बहलदा, बदामपहाड़ और रायरंगपुर बाजार लकरे जाते थे फिर भी हिम्मत नहीं हारे और अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए आस–पास और बड़े व्यापारियों के साथ मिले। कभी कभी बाजारों में नहीं बिकने पर मुफ्त में लोगों को बांट देते थे।

कृषि विभाग आत्मा संस्थान के माध्यम से कोल्ड रूम के बारे में जानकारी मिला सहकारिता विभाग, पूर्वी सिंहभूम के द्वारा मुसाबनी प्रखण्ड के पश्चिम वादिया लैम्पस में कोल्ड स्टोरेज का स्थापना किया गया है। आत्मा के प्रसार कर्मी लैम्पस में स्थापित कोल्ड रूम एवं ग्राम बारूनिया के बीच एक कड़ी का काम किया जिनके सहयोग से आज बारूनिया ग्राम का निंबु कोल्ड रूम में रखा जा रहा है। कोल्ड रूम किसानों के लिए बड़ा सहुलियत हो गया। शिवचरण जैसे अन्य कई किसान अब कोल्ड रूम अपना उपज का भंडारण कर रहे है एवं दो–तीन दिनों में बेचकर अपना लागत निकाल ले रहे है। अब बोरे में भरकर निंबु बाजार ले जाते है। एक वर्ष में दो बार तोड़ाई करते हैं पहला अक्टुबर–नवम्बर में दुसरा जून–जुलाई में। शिवचरण पाड़ेया के पास 100X100 का एक तालाब है जिससे पटवानी करते हैं। शिवचरण अपने आमदनी से मोटरसाईकिल खरीदें है। शिवचरण पाड़ेया निंबु बेचकर प्रति वर्ष सवा लाख से अधिक की आमदनी हो जाती है इसके अलावा शिवचरण बकरी पालन और सब्जियां उपजा कर प्रति वर्ष लगभग 50 हजार से अधिक आमदनी करते हैं कुल मिलाकर प्रति वर्ष लगभग दो लाख रूपए से अधिक आमदनी होती है।

शिवचरण पाड़ेया के साथ–साथ बारूनिया गाँव के लगभग 40 से अधिक अन्य किसानों ने भी निंबु का खेती कर अपना आय बढ़ा रहा है। कृषि प्रभाग अन्तर्गत आत्मा, उद्यान प्रभाग, नाबार्ड एवं डुमरिया प्रखण्ड के प्रखण्ड विकास पदाधिकारी द्वारा बारूनिया गाँव का दौरा कर किसानों से संपर्क कर निंबु के अन्तर्राजकीय स्तर पर विपणन का विचार कर रही है। निश्चित ही बारूनिया गाँव के अलावे पास के अन्य गाँवों में निंबु का खेती करने वाले किसानों को जरूर लाभ मिलेगा।

फुलों की खेती से आय में वृद्धि बेकारी का विकल्प

किसान का नाम	–	महेश्वरी मुण्डा	पिता/पति का नाम	–	सुकलाल मुण्डा
ग्राम	–	पुनासिया	पंचायत	–	अंगारपाड़ा
प्रखण्ड	–	गुड़ाबांधा	जिला	–	पूर्वी सिंहभूम
मोबाइल नं0	–	7970979032			

गुड़ाबांधा प्रखण्ड के अंगारपाड़ा पंचायत अन्तर्गत पुनासिया गाँव की महेश्वरी मुण्डा खेती–बाड़ी कर अपना परिवार चलाने में कंधे से कंधा मिलाकर अपने पति का साथ निभा नहीं है। आज से 20 साल पहले महेश्वरी मुण्डा की शादी ग्राम पुनाशिया के सुकलाल मुण्डा के साथ हुआ। शादी के तीन साल बाद माँ बनी, घर परिवार का काम के साथ–साथ बच्चों का देख–रेख की जिम्मेदारी भी आ गई। एक समय ऐसा भी आया कि पति–पत्नी दोनों दुसरों के घर में मजदुरी करके जीवन–बसर करना पड़ा है।

समय बीतता गया वर्ष 2018 में संयोगवश एक किसान गोष्ठी के दौरान आत्मा द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी मिली, उसने उस समय ठान ली कि वह खेती का कार्य और भी बेहतर तरीके से करेगी जिससे मुनाफा अच्छा हो सके ताकि अपना खुशहाल जिंदगी के सपने साकार हो सके। वह खेती का बागडोर अपने हाथ में लिया और अपना पुरा समय खेत में ही देने लगा साथ ही

कृषि को अपना सहारा बनाई, धीरे–धीरे खेती में वो कार्य करते हुए अधिक उपज हेतु नई तकनीकों के बारे में जानकारी ली और नई तकनीक के साथ चना, सरसों और गरमा धान की खेती करने लगी जिससे आत्मा कर्मियों का पुर्ण सहयोग भी मिला।

धीरे–धीरे खेती में उसका उपज बढ़ता गया जहाँ उसको सलाना 30 से 40 हजार रूपये आमदनी होती थी वो बढ़कर बाद में एक लाख तक मुनाफा होने लगा जिससे वह बहुत ही खुश हुई। 2022 में उन्होंने आत्मा संस्थान के सहयोग से चना, सरसों, मक्का की खेती की।

आत्मा के प्रसार कर्मियों के द्वारा उन्हें साग–सब्जी की खेती के साथ–साथ फुलों की खेती को प्रोत्साहित किये। महेश्वरी मुण्डा जरबेरा फुल की खेती की। उद्यान विभाग से भी सहयोग मिला। शादी के मौसम में खपत बढ़ जाने से प्रतिदिन वह लगभग 400–500 रू0 फुल बेचकर मुनाफा कमाती है जो कि अपने मेहनत से एक अपना पक्का मकान बना कर सपरिवार खुशी से जीवन–यापन कर रही है।

महेश्वरी मुण्डा की दो बेटी है जिसमें एक की शादी बड़ी ही धुमधाम से की और दुसरी बेटी अभी बहरागोड़ा प्रखण्ड के सरस्वती विधा मंदिर विद्यालय में कक्षा 8 में पढ़ाई कर रही है। आज महेश्वरी मुण्डा की खेती और लगन को देखकर वहाँ के दुसरे किसान भी खेती की ओर अग्रसर होते दिखाई दे रहें हैं और साथ ही साथ सहयोग भी ले रहें हैं। जरबेरा फुल की खेती से सालाना महेश्वरी मुण्डा को एक लाख से अधिक आमदनी हो रही है।

संपादक मंडल

संरक्षक एवं मार्गदर्शन : **श्रीमती विजया जाधव,** भा०प्र०से०, उपायुक्त-सह-अध्यक्ष, आत्मा, पूर्वी सिंहभूम

मुख्य संपादक एवं प्रकाशक : **श्री मिथिलेश कुमार कालिन्दी,** परियोजना निदेशक, आत्मा, पूर्वी सिंहभूम

संपादक : **श्रीमती गीता कुमारी,** उप परियोजना निदेशक, आत्मा, पूर्वी सिंहभूम

टंकण एवं साजसज्जा : **श्री अर्जुन सोरेन,** कम्प्यूटर ऑपरेटर, आत्मा, पूर्वी सिंहभूम

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

परियोजना निदेशक, आत्मा

पूर्वी सिंहभूम, जमशेदपुर

संयुक्त कृषि भवन, खासमहल, जमशेदपुर

email: atmajsr321@gmail.com

TOLL FREE NO. : 18001231136